Indian J. Soc. & Pol. 08 (02) : 115-116 : 2021 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JULY 2021 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

शारदा सिंह[1]
[1]शोध छात्र, हण्डिया पी0जी0 कालेज, हण्डिया, प्रयागराज, उ0प्र0 भारत

ABSTRACT

शिक्षा के तीनों स्तरों प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में माध्यमिक स्तर की शिक्षा का व्यक्ति के जीवन में व्यापक महत्व होता है। इन तीनों स्तरों में माध्यमिक स्तर की शिक्षा एक ऐसी कड़ी है जो प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा को जोड़ती है। अतैव माध्यमिक शिक्षा द्वारा प्राथमिक शिक्षा की त्रुटियों को दूर किया जा सकता है एवं उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए छात्रों को योग्य बनाया जा सकता है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थी किशोरावस्था के होते हैं तथा किशोरावस्था अत्यंत सांवेगिक उथल–पुथल एवं तनाव की अवस्था होती है। किशोरावस्था से सम्बन्धित होने के कारण तथा भावी युवा शक्ति के नेतृत्व के प्रशिक्षण का प्रथम केन्द्र होने के कारण माध्यमिक शिक्षा राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी तथा सांस्कृतिक क्षमता को सर्वाधिक प्रभावित करती है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा के महत्व के दृष्टिगत प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया।

***KEYWORDS:** अध्ययन आदत, शैक्षणिक निष्पत्ति, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी*

मानव जीवन में आदतों का विशेष स्थान होता है। वास्तव में आदत मूलरूप में एक मानसिक गुण है। बालक के अर्जित व्यवहार या सीखे हुए व्यवहार में आदतों का महत्वपूर्ण स्थान है। जब बालक किसी क्रिया या कार्य को अपनी इच्छा से जान–बूझ कर बार–बार दोहराता है तब वह क्रिया कुछ समय बाद बिना प्रयास के स्वतः संचालित होने लगती है। बार–बार दोहराये गये ऐच्छिक कार्यो के परिणाम को आदत कहते है। दैनिक जीवन के अधिकांश अध्ययन सम्बन्धी कार्य आदतों के ही फलस्वरूप होते हैं।

शैक्षिक निष्पत्ति

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्र ने किस सीमा तक अपनी शक्तियों और योग्यताओं का विकास किया है? यह उसकी शैक्षिक निष्पत्ति का सूचक है। दूसरे शब्दों में शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, कौशल और योग्यता की मात्रा से है। इनके मापन के लिए विभिन्न प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है। क्रो एवं क्रो के अनुसार (1948)– ''उपलब्धि से तात्पर्य, शिक्षार्थी शिाक्षण के किसी क्षेत्र में शिक्षक द्वारा प्रदत्त निर्देशों के द्वारा कितनी मात्रा में लाभान्वित होता है अर्थात किसी व्यक्ति की उपलब्धि उस मात्रा के द्वारा प्रकट होती है जिस मात्रा में वह प्रदान किए जाने वाले प्रशिक्षण के द्वारा ज्ञान तथा कौशल का उपार्जन करता है।''

शोध–विधि एवं उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा माध्यमिक स्तर के प्रयागराज जनपद के कुल 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया जिसमें 300 छात्र तथा 300 छात्रायें सम्मिलित थी। अध्ययन आदत हेतु डॉ0 बी0वी0 पटेल द्वारा विकसित 'स्टडी हैबिट इन्वेन्टरी' (स्वाध्याय–आदतें परिसूची) का प्रयोग किया गया। परिसूची पर प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर विद्यार्थियों को तीन समूहों – उत्तम अध्ययन आदत समूह (प्राप्तांक 190 या अधिक) , सामान्य अध्ययन आदत (प्राप्तांक 160 से 189) तथा निम्न अध्ययन आदत (प्राप्तांक 159 या कम) में रखा गया। विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति हेतु उनकी गत कक्षा के वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों के प्रतिशत को लिया गया। अध्ययन में शून्य परिकल्पना का परीक्षण किया गया।

मुख्य परिकल्पना :

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।

उप परिकल्पनाएं :

1 – माध्यमिक स्तर के उत्तम अध्ययन आदत वाले एवं निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2 – माध्यमिक स्तर के उत्तम अध्ययन आदत वाले एवं सामान्य अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3 – माध्यमिक स्तर के सामान्य अध्ययन आदत वाले एवं निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारिणी संख्या –1 :माध्यमिक स्तर के उत्तम अध्ययन आदत वाले एवं निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना

समूह	संख्या	शैक्षिक निष्पत्ति		क्रान्तिक अनुपात मान (c.r.)	सार्थकता . 05 स्तर
		मध्यमान	मानक विचलन		
उत्तम अध्ययन आदत समूह	165	61.04	10.14	5.15	सार्थक
निम्न अध्ययन आदत समूह	147	54.93	10.71		

1: Corresponding Author

सारिणी संख्या –2: माध्यमिक स्तर के उत्तम अध्ययन आदत वाले एवं सामान्य अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना

समूह	संख्या	शैक्षिक निष्पत्ति		क्रान्तिक अनुपात मान (c.r.)	सार्थकता . 05 स्तर
		मध्यमान	मानक विचलन		
उत्तम अध्ययन आदत समूह	165	61.04	10.14	2.89	सार्थक
सामान्य अध्ययन आदत समूह	288	58.09	11.00		

सारिणी संख्या –3 :माध्यमिक स्तर के सामान्य अध्ययन आदत वाले एवं निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना

समूह	संख्या	शैक्षिक निष्पत्ति		क्रान्तिक अनुपात मान (c.r.)	सार्थकता . 05 स्तर
		मध्यमान	मानक विचलन		
सामान्य अध्ययन आदत समूह	288	58.09	11.00	2.88	सार्थक
निम्न अध्ययन आदत समूह	147	54.93	10.71		

निष्कर्ष : उपरोक्त सारिणियों के विश्लेषण के उपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं –

1. माध्यमिक स्तर के उत्तम अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति अपेक्षाकृत निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति से अधिक है तथा उत्तम अध्ययन आदत वाले एवं निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अतः उप परिकल्पना संख्या 1, अस्वीकृत की जाती है।

2. माध्यमिक स्तर के उत्तम अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति अपेक्षाकृत सामान्य अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति से अधिक है तथा उत्तम अध्ययन आदत वाले एवं सामान्य अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अतः उप परिकल्पना संख्या 2, अस्वीकृत की जाती है।

3. माध्यमिक स्तर के सामान्य अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति अपेक्षाकृत निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति से अधिक है तथा सामान्य अध्ययन आदत वाले एवं निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अतः उप परिकल्पना संख्या 3, अस्वीकृत की जाती है।

परिणाम :

अध्ययन में निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए –

1. उच्च अध्ययन आदत प्राप्तांक वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति अपेक्षाकृत निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति से अधिक है।

2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर सार्थक प्रभाव होता है तथा यह प्रभाव सकारात्मक होता है।

शैक्षिक उपयोगिता :

प्रस्तुत अध्ययन में जनपद प्रयागराज माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी अध्ययन आदतों के प्रभाव का अध्ययन किया गया। शोध अध्ययन के परिणाम, शिक्षा के गुणात्मक विकास एव ंमानव संसाधन की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। वर्तमान शोध अध्ययन के परिणाम उन शिक्षा शास्त्रियों, समाज सुधारकों, शिक्षाविदों, परामर्शादाता, मनोवैज्ञानिक, चिकित्सकों एवं शिक्षा निदेशकों का मार्ग दर्शन करते हैं जो छात्र एवं छात्राओं की समस्याओं का निवारण करते हैं व माध्यमिक शिक्षा के लिये नियम व पाठ्यक्रम का निर्माण करते हैं व छात्रों के निर्देशन व परामर्श में रूचि रखते हैं। किसी भी देश में माध्यमिक शिक्षा जनसामान्य की मजबूती का आधार है। यदि व्यक्ति माध्यमिक शिक्षा स्तर पर भटक जायें तो सम्पूर्ण जीवन समस्या से ग्रसित होकर उपलब्धियो से वंचित हो जाता है। अध्ययन में इसी समस्या की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया गया है कि यदि विद्यार्थियों में उत्तम अध्ययन आदतें विकसित की जायें ंतो उनकी शैक्षिक निष्पत्ति को अधिकतम ऊॅचाईयों तक ले जाया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति पर उनकी अध्ययन आदत से सकारात्मक रूप से प्रभावित होती है अतः शिक्षा जगत से जुड़े शिक्षा शास्त्रियों, परामर्शादाताओं, मनोवैज्ञानिकों आदि को ऐसे उपाय किए जाने चाहिए जिससे विद्यार्थियों में उत्तम अध्ययन आदतों का विकास हो सके।

REFERENCES

कुप्पूस्वामी, बी. (1976). *बाल व्यवहार और विकास,* नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि.

गुप्ता, एस. पी. (2008). *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,* इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स

गुप्ता, ए. (1982). *स्ट्रेस एमंग वर्किंग, इट्स इफेक्ट्स ऑन मैरिटल एडजस्मेंट,* पेपर प्रेजेन्टेड एट दि यू0 जी0 सी0 सेमिनार ऑन स्ट्रेस इन कान्टेम्प्रेरी लाइफ, नई दिल्ली : स्ट्रेटजी ऑफ कोपिंग

गुप्ता, एस. पी. (2008). *सांख्यिकीय विधियाँ,* इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स

भार्गव, डॉ महेश (2009). *मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन,* आगरा : राखी प्रकाशन, एच.पी. भार्गव बुक हाउस